Indian Culture and Social Issues

Ms. Rekha Kumari

Assistant Professor

Department of Sanskrit

Shivaji College

भारतीय संस्कृति

- भारतीय संस्कृति से तात्पर्य है भारत की संस्कृति।
- भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृतियों में सर्वोच्च पद प्राप्त है। भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताएं हैं।
- **सर्वाधिक प्राचीन।**
- **अक्षुण्ण प्रवाह।**
- **समन्वयभाव तथा विचार सहिष्णुता।**
- **ग्रहणशीलता।**
- **अनुकूलता एवं परिवर्तनशीलता।**
- **आध्यात्मिकता।**

- सर्वांगीणता।
- संचरणशीलता।
- धर्मपरायणता।
- आशावाद।
- आस्था एवं कर्मवाद।
- पुनर्जन्मवाद।
- अवतारवाद।
- विश्वकल्याण एवं विश्वबन्धुत्व की भावना।
- त्यागभावना।
- साम्यवाद।

आध्यात्मिकता

- भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता उसकी अध्यात्म भावना है।
- जिस संस्कृति के आध्यात्मिक विचार जितने अधिक और गहन होते हैं वह संस्कृति इतिहास में उतनी ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
- भारतीय संस्कृति ने इहलौकिक सुखों को जीवन का परम लक्ष्य स्वीकार नहीं किया, अपितु इस नश्वर देह व भौतिक सुखों की अपेक्षा ब्रह्म, जीव, माया, ईश्वर, मोक्ष आदि के विचार को ही प्रमुखता दी।

सर्वांगीणता

- किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जब उसकी विभिन्न प्रवृत्तियां सहज रूप में विकसित भी हों और पूर्णतया सन्तुष्ट भी।
- भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था और पुरूषार्थ के पालन से शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास होता था।
- सभी का समान पालन होना चाहिये इसी से ही सर्वांगीणत का विकास सम्भव है।

संचरणशीलता

- मनुष्य को निरन्तर कर्मरत रहकर उत्साहपूर्वक रहने की जितनी प्रेरणा भारतीय संस्कृति ने दी है, उतनी अन्य संस्कृति ने नहीं।
- मनुष्य जब कर्मरत रहता है तभी संचरणशील भी रहता है।
- अपने कार्यों के प्रति निश्चयता का भाव रखना भारतीय संस्कृति ही सिखाती है।
- निरन्तर कर्म करते रहना ही जीवन है। भारतीय संस्कृति में कार्यशील रहने के लिये उपनिषदों में कहा गया है कि- सोता हुआ व्यक्ति कलयुग है, निन्द्रा समाप्त कर जंभाई लेता हुआ व्यक्ति द्वापर युग, आलस्य त्याग कर उठता हुआ व्यक्ति त्रेता और चलता हुआ सतयुग(कृतयुग) के समान है।

धर्मपरायणता

- भारतीय संस्कृति के अनुसार धर्म वह है जो इहलोक और परलोक दोनों को सिद्ध करे।
- जिस आचरण से इस संसार में विविध उन्नति प्राप्त हो और मृत्यु से परे लोक में मोक्ष सिद्ध हो जाता हो, वही धर्म है।
- व्यक्ति और समाज को धारण करने वाला तत्त्व धर्म कहलाता है।
- मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षणों का वर्णन मिलता है- धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और क्रोध न करना।